International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-10-2020; Accepted: 23-10-2020; Published: 10-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 19-20

मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में नई चेतना

प्रभात सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मनोहर श्याम जोशी का जीवन निराला जी के ही समान आर्थिक कठिनाईयों से गुजरा है। फलतः वे अपने अनुभवों के साथ ही साथ समाज के कटु यथार्थ के साथ रूबरू थे। अतः उनकी कथा कहानियों में उपेक्षितों दलितों के प्रति समर्पण का भाव उनकी प्रतिबद्धता थी और यही कारण है कि आज वे हिन्दी साहित्य में शीर्ष स्थान पर है।

मूल शब्द: मनोहर श्याम जोशी, साहित्य, नई चेतना

प्रस्तावना
मनोहर श्याम जोशी समकालीन परिवेश के यशस्वी साहित्यकार रहे हैं। किसी महान मानव की जीवनी तिथियों एवं सम्वत्सरों में बांधी नहीं जा सकती, क्योंकि वे अपनी लेखनी से अमरता प्राप्त कर लेते हैं, उनका साहित्य ही उनका जीवनवृत्त होता है। साहित्य अकादमी सहित कई सम्मानों से सम्मानित उपन्यासकार मनोहर श्याम जोशी के गहन आत्ममंथन, सघन समग्रता बोध और अपूर्व सम्वाद से भरपूर साहित्य को पाकर हिन्दी समाज निश्चय ही गर्व कर सकता है।
''होनहार विरवान के होत चीकने पात'' के अनुसार कुछ उच्च विचार वाले व्यक्तियों के सान्निध्य से आगे बढ़ने को रास्ता खुलता गया। अमृतलाल नागर और अज्ञेय जी का मार्गदर्शन फलदायी रहा है। मनोहर श्याम जोशी अपने जीवन में नियति के द्वारा प्राप्त विसंगतियों से लड़ने और उबरने का उद्‌गार कथा शैली में प्रवाहित किया है जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। यह कहना असंगत न होगा कि –

श्याम है मोहित उससे, विस्मय की यह बात नहीं

भगवती माया का प्रभाव है ऐसा उनकी शक्ति का पार नहीं।''[1]
विश्व प्रवाह में जब नवीन युग की सूचना होती है तब उस युग सन्धिक्षण में एक–एक युग मानव का अविर्भाव होता है। उनको भागवत पुरुष आचार्य, गुरु, नेता, साहित्यकार या महामानव जो भी कुछ कहिये उनके जीवन वृत्त से आगामी युग की व्यथा वेदना, अभाव, अशान्ति, आशा–आकांक्षा, संशय, समस्या का समाधान तथा उनकी साधना, चिन्ता भावना एवं कर्मठता से मानव जीवन की यातनाओं का प्रतिकार के उपाय का संकेत प्राप्त होता है। जब जब ऐसे महामानव के प्रवर्तित आदर्श व अवदान क्रमशः विकसित हो कर मानव समाज की सेवा तथा साहित्य व संस्कृति के भण्डार को समृद्धितर व पूर्णतर करके शक्ति–शक्ति तथा समाधान का मार्ग प्रदर्शित करते हैं तब–तक साधारण जनगण उस कर्मयोगी को समझ नहीं पाते। अतः वे उस पर विश्वास तो कर ही नहीं सकते प्रत्युत अन्दर–बाहर से उसका विरोध करते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने कहा है –

''अवजानन्ति मां मूढ़ाः मानुषी प्रनुमाश्रितम्।
परं भावभजानन्तों मम भूतभहेश्वरम्। ''[2]

हे अर्जुन ! मेरे परमभाव को न जानने वाले मूढ़ लोग मनुष्य का शरीर धारण करने वाले मुझ सम्पूर्ण भूतों के महान ईश्वर को तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योग माया से संसार के उद्धार के लिए मनुष्य रूप में विचरते हुए मुझ परमेश्वर को साधारण मानव मानते हैं।
जोशी जी की लेखनी ने इसे कर दिखाया कि साहित्य समाज का दर्पण है। जोशी जी का समग्र साहित्य जोड़ने का कार्य किया है तथा समाज में नई चेतना भरी है। मुझे लगता है कि हमारी पुरानी पीढ़ी जिसने रचनाकार मनोहर श्याम जोशी को पहचान लिया था, वे प्रोफेसनल आलोचक नहीं बल्कि जोशी जी रचनात्मकता के पाठक थे। उनकी दृष्टि में जो पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन हुआ करता है वह भी एक ढंग से आलोचना का ही काम करता है। सम्पादक एक लेखक की रचना को पहचानता है और अपनी पत्रिका में स्थान देता है। अब जो समकालीन वक्त है वह बहुत मुश्किल वक्त है। एक तो किताब के ऊपर खतरा है। पुस्तकीय पठनीयता लोगों ने कम कर दिया है। लोग प्रायः टी.वी. देखते हैं, यह खतरा किताब के ऊपर है। इसलिए साहित्य जगत में पहचान बनाने के लिए लोगों को इतना मेहनत करना पड़ता है कि वह कोई दूसरे काम मे ंलग जाता है। कोई इतना इन्तजार कैसे कर सकता है कि आलोचक बीस साल बाद उसे देखें। मेरी यह प्रार्थना है कि रचनाकार युवा पढ़ी को पहचान दिलाने में न कतराएं।

विश्लेषण
मनोहर श्याम जोशी ने अपनी जीवन्त कृतियों के द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। वर्षों से दिल्ली, मुम्बई महानगर में तथा देश विदेश के प्राख्यात अंचलों में रहकर उन्होंने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। हिन्दी के बुद्धिजीवी लेखक के व्यक्तित्व कृतित्व के बारे में पुस्तकीय माध्यमों से प्राप्त जानकारियां अधिक स्पष्ट और प्रखर रूप से निखर उठी हैं और मेरे मन में जो शंकाएं व अस्पष्टताएं थीं, वे बस दूर हो गयीं। उन्हीं के शब्दो में मैं व्यावसायिक पत्रकार हूँ तथा व्यावहारिक प्राणी हूँ।[3]
इसी प्रसंग में वे लिखते हैं कि ''लक्ष्मी की आराधना करने वाली वैश्य जीवन–दृष्टि तो बहुत पुरानी है और सारा आधुनिक पूंजावादी तन्त्र उसी से उपजा है, लेकिन अमरीका में ही पिछले कुछ दशकों में पैसे को पूजने वाली वैश्य दृष्टि के साथ उपभोग पर पैसा फूंकने वाली सामन्ती दृष्टि जोड़ कर उपभोक्तावादी क्रान्ति कर डाली है। 'पैसा कमाओ, गुलछर्रे उड़ाओ' अब यही सारे संसार का नारा है।[4]
स्वीकारोक्त पत्रकारिता ने आम आदमी को भी यह अवसर दिया

कि वह अपने भीतरी भेद बताकर 'सेलिब्रिटी' बन सके – भले ही सीमित समय के लिए। जैसा कि एक अमरीकी 'सेलिब्रिटी' कलाकार एण्डी वार्होल ने कहा था– अब हर कोई पन्द्रह मिनट के लिए ही प्रसिद्ध हो सकता है। तो लोगबाग पत्र–पत्रिकाओं में अपनी विचित्र, दु:खभरी, संघर्षमय वगैरह–वगैरह आपबीतियां छपवाने लगे बगैर किसी संकोच के। टी.वी. में इसका माध्यम 'टॉक–शो बने, जिनमें लोगों को अपनी 'आपबीती' दर्शकों के सामने बयान करने का बुलाया जाता है।[5]

पुस्तकीय पठनीयता के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने की दिशा में लेखकीय प्रयास स्तुत्य है। उदाहरणार्थ – आज की दुनिया में टी. वी. पर देखा जाना प्रसिद्धि पाने का पर्याय बन गया है, जो रोजाना टी.वी. पर देखा जाता है वह सभी के द्वारा पहचाना जाता है। 'बिग ब्रदर' के पहले संस्करण में हिस्सा लेने वाले जिस बेरोजगार जर्मन बढ़ई ने अपनी गायन–कला का प्रदर्शन किया उसे इतनी लोकप्रियता मिली कि वह एक मशहूर कम्पनी द्वारा अनुबन्धित कर लिया गया और जर्मनी का पॉप–स्टार बन गया। बिग ब्रदर में हिस्सा लेने वाली एक प्यारी–प्यारी, भोली–भाली–सी लड़की किसी अरबपति के मन भा गयी और उसने उसे दुल्हन बना लिया।[6]

पुनश्चः भारतीय चैनल जी.टी.वी. ने हिन्दी में पहला रियेल्टी टी. वी. शो 'पी.ओ. डब्ल्यू', बनाने की घोषणा कर दी है जिसमें कुछ लोगों को युद्धबन्दी बनाकर जेल में बन्द कर दिया जायेगा। कुछ अन्य चैनलें भी रियेल्टी टी.वी. शो बनाने की सोच रही है। [7]

समय को क्या हुआ है? इस प्रसंग में मनोहर श्याम जोशी के विचार कितना प्रासंगिक लगते हैं। यथा समय की रफ्तार से पार पाने के लिए आधुनिक इन्सान ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के चमत्कार से अपने हर काम की रफ्तार बढ़ा दी। इससे समय के साथ–साथ होने वाला परिवर्तन घड़ी में टिकटिकाते समय की तरह तेज हो चला है।[8]

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, मनोहर श्याम जोशी की समग्र साहित्य नयी चेतना से समादृत है। उनकी दृष्टि में नवयुग का युगान्तकारी भाव ज्योतिर्मान है। जोशी जी के साहित्य में मानवीय मूल्यों का अजस्र प्रवाह है।

सन्दर्भ सूची

1. छायावादोत्तर काव्य का सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 232, कमला प्रसाद.
2. गीता – 9/11.
3. 21वीं सदी–आ रही है एक अदद प्रायोजित शताब्दी, पृष्ठ 7, मनोहर श्याम जोशी.
4. वही, पृष्ठ 9.
5. 21वीं सदी–बेपर्दा हम सब होंगे, करेंगे सबको बेपर्दा, पृष्ठ 15, मनोहर श्याम जोशी.
6. 21वीं सदी–बिग बी की टक्कर अब बिग ब्रदर से, पृष्ठ 17, मनोहर श्याम जोशी.
7. वही, पृष्ठ 19.
8. 21वीं सदी–समय को क्या हुआ है?, पृष्ठ 23, मनोहर श्याम जोशी.